महिलाओं की भूमिका

(Role of Women)

Sex ÷ व्यक्ति की जैविकीय विशेषता।

Sex :- से तात्पर्य व्यक्ति की जैविकीय विशेषताओं से है, जो प्रजनन अंगों के आधार पर निर्धारित होते हैं। इसमें Donar को नर एवं Recipent को नारी कहते हैं। वैसे व्यक्ति जिसमें उक्त दोनों में से कोई क्षमता नहीं वह तृतीय लिंगी कहलाता है।

जैण्डर :-

वहीं जेण्डर, sex की सामाजिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है। Like महिला → (Shy, soft etc.)
(विकसित by sociaty)

महिला तथा पु० के संबंधों तथा भूमिकाओं को समझने के लिए तीन दृष्टिकोणों का प्रयोग किया जाता है —

1) परंपरावादी दृष्टि

1) परंपरावादी दृष्टिकोण - जो मानता है, कि समाज में सभी भूमिकाओं एवं श्रम का समान महत्व नहीं होता है, और इसलिए पारितोषिक (वेतन, प्रतिष्ठा, पद etc) भी समान नहीं होते हैं। चूँकि पुरुष महिलाओं से अधिक imp. भूमिका निभाते हैं। ∴ उनके विशेषाधिकार भी वैधानिक हैं। ∴ स्त्री तथा पु० के साथ असमान व्यवहार स्वीकार्य है।

2) संरचनात्मक दृष्टि

(2) संरचनात्मक दृष्टि :- acc. to it स्त्री तथा पु० असमानता जैविकीय विशेषताओं में नहीं, बल्कि समाज की संरचना में निहित होता है। जन्म के साथ किसी भी व्यक्ति में विशेष गुण नहीं होते, बल्कि सभी

लगभग समान विशेषताओं के साथ जन्म लेते हैं। लेकिन संरचना में जन्म के साथ ही स्वास्थ्य, अवसर, शिक्षा etc. में भेद-भाव शुरू किया जाता है। जिससे आगे चलकर स्त्री तथा पु० में असमान क्षमता विकसित होती है। जो जेण्डर असमानताओं का मूल है।

3) **मार्क्सवादी नारीवादी विचार** :- मा० विचारों के अनुसार समाज में सभी असमानताओं के मूल में आर्थिक शक्तियाँ होती हैं। जो वर्ग आर्थिक शक्तियों को नियंत्रित करता है, उसी वर्ग का समाज के सभी संबंधों एवं संस्थाओं पर भी नियंत्रण होता है। हे संस्था० पर नियंत्रण से ही पितृतंत्र का विकास हुआ। जो स्त्री-पु० असमानता के लिए उत्तरदायी है। और इस प्रकार महिलाओं की स्वतंत्रता। - समानता आ० आत्म-निर्भरता पर निर्भर करती है।

आर्थिक शक्तियों को cont. => वही नारी चीजों का - मार्क्सवादी नारीवादी विचार

⇒ Rosalyn Yalow (नोबेल पुरस्कार) :-

"समाज कई प्रकार की समस्याओं से गुजर रहे हैं, गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, असमानता, सतत विकास आदि, परंतु जो समाज आधी आबादी (म०) की उपेक्षा कर इन समस्याओं का समाधान ढूंढने के प्रति आशावान है। वो कहीं न कहीं अपने एवं भविष्य की पीढ़ियों के साथ धोखाधड़ी कर रहा है।"

Ex :- हरियाणा

Social Index ↓

भारत एक पितृसत्तात्मक (पुरुष प्रधान S.) है। जहाँ भूमिकाओं का निर्धारण Gen. के आधार पर किया जाता है।

Jean Peirsene — 16वी सदी यूरोप, 18वी सदी — महिलाओं

इस भूमिका निर्धारण में परंपरागत रूप से पुरुष घर के बाहर की जिम्मेदारियाँ उठाते हैं, तथा महिलाएँ घरेलू कार्य करती हैं। जिस S. में श्रम का विभाजन या भूमिकाओं का आवण्टन क्षमताओं, योग्यताओं एवं इच्छाओं पर आधारित ना होकर जन्म आधारित लिंग पर होता है। वहाँ समाज में त्रिस्तरीय विघटन होते हैं।

(-)
- resource का mis use
- नई की कुशलता का उपयोग
- स्त्री-पुरुष संबंध
- विघटन
- b/w M & F
- पारिवारिक ...

1. व्यक्तिगत तथा नैतिक स्तर पर ⇒ ?
2. घरेलू / पारिवारिक " "
3. सामाजिक

भारत के प्रारंभिक इतिहास की कुछ घटनाओं को छोड़ दिया जाये, तो पितृसत्तात्मक होने के कारण महिलाएँ सदैव से समाज के हाशिये पर रही। समाज के सभी बुरे अनुभवों का कारण तथा भुक्तभोगी महि. को माना गया। जिसके कारण उन पर बहुआयामी वंचनाएँ आरोपित की गयी। अमर्त्य सेन के शब्दों में : भारतीय संस्कृति के विकास के क्रम में लाखों महिलाएँ पीछे छूट गयी (कु० रे०17,

मैं महिलाओं के या एक समाज संस्थाओं के सम्मान में असफल है।

जिस समाज में महिलाओं के ज्ञान, कौशल, क्षमता का उपयोग समाज के विकास एवं पुनर्निर्माण में किया जाना चाहिए था। उनकी हत्यायें की गयी। और यही कारण है, कि गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी जैसी समस्याओं से समाज लड़ने में सफल नहीं हो पा रहा है।

आर्थिक गतिविधियों

जीन ड्रीज ... मानते हैं कि भारत में महिलायें (ज्यादा) वेतनभोगी श्रमिक नहीं होती। जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव उनके पोषण, शिशु स्वा., महिला स्वास्थ्य और उनकी सामाजिक हैसियत पर पड़ता है। वहीं दूसरी तरफ वैसे समाजों/परिवारों में जहाँ महिलायें आ० उत्पादन में शामिल होती हैं। उनकी सा० हैसियत शिक्षा, स्वास्थ्य आदि भी बेहतर होती हैं। भारत में भी वैसी महिलाएँ जो आ० गति० में भागीदारी है (जनजातियाँ) उनमें या लैंगिक समानता आ चुकी है, या (नगरीय कामकाजी महिलाएँ) समानता के लिए संघर्ष कर रही हैं। और इसका प्रभाव सामाजिक सुधारों राजनीतिक सहभागिता आदि के स्तर पर भी देखा जा सकता है। इस अंतर को भारतीय संदर्भ में भी देखा जा सकता है। एक तरफ केरल

दक्षिण भारतीय राज्य हैं, वहीं दूसरी तरफ यू.पी., बिहार, राज० जैसे N० भारतीय राज्य है। केरल जैसे समाजों में म० के सार्वजनिक जीवन में भागीदारी के कारण जहाँ परंपरागत रूप से चली आ रही कुप्रथाएँ या तो समाप्त हो गयी या समाप्ति के कगार पर हैं। वहीं दूसरी तरफ ठीक इसके विपरीत जैसे N० भारतीय समाज जहाँ महिलाएँ आ० एवं सार्वजनिक जीवन मे भागीदार नहीं हैं। उन समाजों में सामाजिक कुरीतियाँ यथा- भ्रूण हत्याएँ, बालिका शिशु वध, बाल विवाह, दहेज etc से लड़ने में समाज नाकाम रहा है। N० भारतीय राज्य आ० पिछड़ेपन के साथ-2 सामाजिक पिछड़ेपन की भी शिकार हैं।

दूसरी तरफ कई विद्वान सा० पिछड़ेपन को धर्म से जोड़कर देखते हैं, जो सही नहीं है। उदा० के लिए केरल तथा श्रीलंका अलग-2 धर्मावलंबी होने के बावजूद सामाजिक-आर्थिक सूचकांकों में समान स्थिति में हैं। वहीं दूसरी तरफ दिल्ली से लेकर राँची तक महिलाओं की स्थिति समान है, जबकि धर्म अलग-2 है।

धार्मिक

इस प्रकार महिलाओं की भूमिका देश तथा समाज के विकास में अत्यंत imp. है।

म० की भूमिका को पाँच

श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :-

(1) विकास में भूमिका
(2) स्वास्थ्य व शिक्षा में भूमिका
(3) मा० गति० में भूमिका
(4) राज० सहभागिता
(5) महिलाओं तथा पीड़तीकरण (Victemization)

विकास में भूमिका भारत में म० की भूमिका को चार आयामों में समझने की आवश्यकता है।

1) अगर S. में G. समानता पर बल दिया जाये, तो ना सिर्फ म० की स्थिति सुधरेगी बल्कि वो S. निर्माण में भी imp. भूमिका निभा पायेगी।

2) S. के आ० विकास में म० की अति सकारात्मक भूमिका होती है। जिसके कारण वो समाज में एक बेहतर वातावरण व जीवन स्तर बनाने में योगदान देती है।

3) म० की आ० विकास में भूमिका उनके ~~आर्थिक~~ सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करती है। जिसका प्रभाव उनके अन्य विषयों के नजरियें पर पड़ता है, और ये आत्मविश्वास को अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करती है।

4) भारत जैसे समाज में ऐसी धार्मिक- सांस्कृतिक साहित्य होते है, जो विभिन्न काल्पनिक घटनाओं का उल्लेख कर म० को पुरुषों के आधिन रहने को वैधानिकता प्रदान करते हैं। जिसके कारण म० के विकास का मुद्दा कभी समाज की प्राथमिकता नहीं बन ~~पाती~~ पाती है। अतः ऐसे साहित्यों को

दर्शन है
↓
Minor understanding of anything

) ← दोनों के मध्य ईश्वर ○
वस्तु
↓
तत्व मीमांसा
मार्क्स मेटिक्स है

पुनः परिभाषित किया जाना समाज के लिए आवश्यक है। परिस्थितियाँ बदली हैं, जैसे जैसे सूचना तथा तकनीक में परिवर्तन आ रहे हैं। इसने परिवार की संरचना को प्रभावित तथा परिवर्तित किया है। स्त्री-पु॰ संबंधों में परिवर्तन आ रहे हैं, और विशेषकर परिवार तथा S. के विकास में महिलाओं की भूमिका बदली है विशेषकर मध्यवर्गीय महि॰ के संबंध में। परंपरागत रूप से म॰ की परिवार में कुछ निश्चित भूमिकाएँ हैं, जैसे - घरेलू कार्य तथा बच्चों का लालन-पालन।

—— परिवर्तन के साथ उन्होंने नवीन आ॰ गति॰ में अपनी भूमिका बढ़ा ली है। परन्तु उनके आधु॰ भूमिकाओं एवं परंपरागत भू॰ के बीच समन्वय बनाने की चुनौती आई है। विजय कुमार तथा पार्थ सारथी ने अपने लेख "Women in Changing Society" में भारतीय महिलाओं की तीन प्रमुख भूमिकाओं का उल्लेख किया है।

Ques महिलाओं की आधुनिक व परंपरागत भूमिकाओं में सामंजस्य किस प्रकार स्थापित

(1) विवाह पूर्व भूमिकाएँ
(2) पारिवारिक भूमिकाएँ
(3) परिवारेत्तर भूमिकाएँ

इनके अनुसार वर्तमान के इस दौर में महि॰ का जीवन (मध्य वर्गीय) अधिक चुनौतीपूर्ण है क्योंकि उन्हें परंपरागत तथा आधु॰ भूमिकाओं के बीच

वर्तमान में जो परिवर्तन हुए हैं, उसने महिलाओं को विभिन्न क्षेत्रों में अपना योगदान देने का अवसर दिया है। जिसके कारण शिक्षा - स्वास्थ्य, राजनीति, कानून, P. जागरूकता etc क्षेत्रों के विकास में म० ना सिर्फ सहभागी है, परंतु इन क्षेत्रों को प्रभावित भी करती है। अगर प० देशों की महि० से तुलना की जाये, तो अभी भी भारतीय म० सार्वजनिक जीवन को प्रभावित करने के मामले में बहुत पिछे है। ऐसा ∴ है, bcoz उन पर सदियों से चली आ रही परंपराएं आरोपित (Impose) है, जिसके कारण वह अभी भी परंपरागत मान्यताएं तोड़ नहीं पाती। G.K. रेड्डी व. कुसुमा ने अपने लेख "Rural Women Stregies for Development" में लिखा कि म० की भूमिका समाज में imp. है। इनका कुपोषण, स्वास्थ्य समस्याएं, अशिक्षा, संविधान तथा कानून की अज्ञानता, कई अनौपचारिक क्षेत्रों में कार्यरत होना कुछ ऐसे पहलू हैं, जो ग्रामीण विकास की रण० को प्रभावित कर रहे हैं। इन क्षेत्रों में विकास के बिना ग्रामीण विकास की रणनीति सफल नहीं हो सकती। ∴ ग्रा० वि० की प्राथमिकता में म० मुद्दों को वरियता देनी होगी। अन्यथा इसके बिना ग्रामीण विकास ...

जहाँ तक स्वास्थ्य तथा शिक्षा का प्रश्न है, म.सा. में 10% प्रताड़ित या पीड़ित नहीं है, क्योंकि वह गरीब है। बल्कि ... है, क्योंकि मा. आदतें, परिवार, अंधविश्वास, निरक्षर आदि से जकड़ी हुई है। ये सब उनके मनोवृत्ति को प्रभावित करते हैं। जिसके कारण स्वास्थ्य तथा पोषण, बच्चों के लालन पालन पर इसका दुष्प्रभाव पड़ता है। शिक्षित मां परिवार तथा बच्चों के पोषण तथा लालन-पालन में imp. भूमिका निभा सकती है।

ज्ञान के उच्च स्तरीय स्थिति में पहुँचने पर म. सा. वातावरण एवं भविष्य की चुनौतियों को समझने लगती है। जिसके कारण - (1) परिवार कल्याण एवं परि. नियोजन में उनकी भूमिका बढ़ जाती है।
(2) परिवार में बच्चों की सं., अंतराल, उनके स्वास्थ्य टीकाकरण आदि में वो स्वयं सहगामी हो जाती है।
(3) वो समाज में एक imp. वेतनभोगी, कुशल श्रमिक बनती है।
(4) नारी संबंधित मुद्दों को बेहतर समझ एवं परिवर्तित करने में भूमिका निभाने लगती है।

जय लक्ष्मी तथा रुक्मणी ने अपने लेख "Caste & class - a relationship in family planning" में लिखा कि उच्च तथा मध्य वर्गों में म. परि. नियोजन तथा बच्चों की सं. को निर्धारित करने में सकारात्मक भूमिका निभाती है। ... नहीं ... वो यह स्त्रियाँ स्वयं ... शिक्षित तथा जागरूक

(1949 - Economic & Political weekly)

घरेलू जिम्मेदारी / ऐसे ... को प्रभावित

होने के कारण उन्हें यह शक्ति कई मायनों से प्राप्त होती है। ठीक इसके विपरीत निम्न वर्गों एवं जातियों में मु० आ० रूप से सक्रिय होने के बावजूद परि० निर्णो० में कोई भूमिका नहीं निभाती तथा नाहि उनकी राय ली जाती है।

जैसे-2 चिकित्सा के क्षेत्र में विकास हो रहा है, वैसे-2 नैतिक, सामाजिक तथा वैधानिक मुद्दे परिवर्तित हो रहे हैं जिसका समाज पर दूरगामी प्रभाव पड़ रहा है। वर्गीज & पन्नीस ~~Average~~ ने तकनीकी शिक्षा व परिवार के बीच सहसंबंध का अध्ययन किया तथा पाया कि वैसे परि० जो म० को तकनीकी शिक्षा यथा - इंजि, मेडिकल, MBA, etc. कोर्स कराते हैं, वो अधिक आधुनिक एवं उदार होते हैं। जबकि इसके विपरीत परंपरागत परिवार म० को होम साइंस, इंटिरियर डेकोरेटर जैसे कोर्सों को वरीयता देते हैं, जो उन्हें एक बेहतर पत्नि तथा परि० चलाने में भूमिका निभा सके।

परंतु imp. यह है कि शिक्षा का स्वरूप या प्राथमिकता परंपरागत हो, या आधु०, विज्ञान हो या मानविकी महिलाएं घरों से बाहर निकले व आगे चलकर समाज में imp. भूमिका निभायें।

महि० की S. के आ० विकास में imp. भूमि० है।
जिन S. में म० भागीदारी शामिल है। वैसे समाज न
सिर्फ बेहतर आ० स्थिति में होते हैं, बल्कि उन समाजों में HDI
etc. भी बेहतर स्थिति में होते हैं। Ex० के लिए ग्रामीण क्षेत्रों
में भूमिहीन श्रमिकों की एक बड़ी सं० निम्न जाती एवं
वर्गीय महिलाओं की होती है, जो अपने पु० के समकक्ष
कमाती है। जिसके कारण पारि० निर्णयों में उनकी भूमि-
का imp. होती है। परंतु जब से कृषि का आधु० एवं
मशीनीकरण हुआ (ट्रैक्टर, हार्वेस्टर, etc) है, तब से
म० श्रम के नियोजन पर इसका (−)ve प्रभाव
पड़ा है। म० बेरोजगार हुई है, जिसका प्रत्यक्ष-
परोक्ष प्रभाव उनके पारि० हैसियत पर पड़ा है।
अध्य० के acc. कृषि के आधु०
एवं मशीनीकरण का प्रभाव स्त्री० तथा पु० दोनों पर पड़
परंतु भारत में ग्राम - नगर प्रवसन का स्वरूप पुरुष
होने के कारण ग्रा० श्रमिक नगरों (U) में रोजगार के
लिए चले जाते हैं। परंतु महिलाएं बेरोजगार बनी रहती हैं,
अर्थात ग्रामीण क्षेत्रों में जितना ~~अधिक~~ मशी० हुआ
उसका उतना ही अधिक दुष्प्रभाव परि० में महि० की
हैसियत पर पड़ा। ∵ भारत में म० की
स्वतंत्र हैसियत नहीं है, ∴ वो स्वतंत्र रूप से
अपने रोजगारों का चयन नहीं कर पाती। जिसके कार
म० विचारों के स्तर पे पिछड़ी रही है। उदा०

भारत में श्रम शक्ति सहभागिता दर (2001) R. A. में पु० => 54.3%, F - 30.2% है

नगर => पुरुष = 51.2% F => 14.7%

ही वेतन भोगी श्रमिक है।

Rural Area में देश की कृषि से संबद्ध कुल श्रमिकों की सं० में से 38.41% जुताई के कार्य से जुड़े हैं। तथा 26.44% कृ० श्र० के रूप में कार्य कर रहे हैं। 38.41% में 7.72% पु० श्र० हैं, तथा 10.3% म० हैं। वहीं दूसरी तरफ पु० एवं स्त्री दोनों (कुल श्रमि को) जबकि (26.44%) में से क्रमशः 30.69 (M) व 16.31 (F) हैं।

हालाँकि R. जनसंख्या में M तथा F लगभग बराबर (51.4%) (48.6%) हैं।

म० की P. तथा सार्वजनिक जीवन में भूमिका स० के विकास में अत्यंत imp. है। संसा० का वितरणात्मक न्याय होना आवश्यक है। और इसके लिए यह imp. है कि जहाँ-जहाँ नीति निर्माण एवं क्रियान्वयन होते हैं, वहाँ महि० की भूमि० सुनिश्चित की जाये। इसके लिए दो imp. कदम उठाये जा सकते हैं।

1) भूमि सुधार कार्यक्रमों को प्रभावी बनाना तथा उसमें म० को प्राथमिकता देना। और इसके लिए भूमि के आवंटन, खरीद - बिक्री में महि० के नाम को अनिवार्य रूप से शामिल किये जाने की है।

(margin: मो० के ... की उपस्थिति)

2. ....

(2) म० आरक्षण बिल को शीघ्र पास किया जाना चाहिए, जिसके कारण वो अपने जीवन से जुड़े निर्णयों को लेने मे M पर निर्भर ना रहे। नीति निर्माण में बिना इनकी भूमिका को सुनिश्चित किये ना तो लोकतंत्र मजबूत होगा, ना ही इनका सशक्तीकरण। दुर्भाग्यवश लोकतांत्रिक प्रक्रिया में संसद तथा विधानसभाओं मे वही F पहुँच रही है, जिनकी पारिवारिक राजनैतिक पृष्ठभूमि है। जिसके कारण वह अपने दल तथा परिवार के मुद्दों तक ही सीमित तथा सक्रिय रहती है। अक्सर इनका सम्बन्ध राज० घरानों से रहता है। जो परंपरागत पुरुषवादी मानसिकता का प्रतिनिधित्व करते हैं। और यही कारण है, कि ये स्वतन्त्र नारी मुद्दों के लिए संघर्ष नहीं कर पाती।

समाज में पितृसत्तात्मकता के कारण S० की समस्याओं के कारण तथा भुक्तभोगी के रूप में F को देखा जाता है। जैसे (1) अगर पत्नि घरेलू हिंसा की शिकार है, तो माना जाता है, कि उसी का दोष रहा होगा।

(2) अगर महिला विवाह विच्छेद चाहती है, तो उसके चरित्र पर ? किया जाता है।

(3) अगर उसके साथ छेड़-छाड़, बलात्कार आदि होते हैं, तो उसकी वेशभूषा, समय etc पर ? किया जाता है, etc

जिससे F का पीड़ितीकरण, वहां

म० में ढूंढ लेता है। बच्चों की रक्षा के लिए म० महत्वपूर्ण है। जैसे कानून बने तथा उनका प्रभावी अनुपालन हो, जिसके कारण उनका शोषण बंद हो, और वो सार्वजनिक जीवन में आत्म विश्वास के साथ समाज निर्माण में imp. भूमिका निभा सके।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है, कि भारत जैसे विकासशील समाज के आ० - सा० - रा० मोर्चों पर संघर्ष कर रहे हैं। व सीमित संसाधनों में गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव जैसी समस्याओं से निपटने की चुनौती है। ऐसी स्थिति में आधी आबादी की सक्रियता तथा imp. भूमिका के आवाहन के बिना इन चुनौतियों से निपटना आसान नहीं होगा। तथा प० समाजों से ये शिक्षा तथा सबक लेनी होगी, कि कैसे दो-दो विश्व युद्ध में बर्बाद होकर म० की भूमिका सुनिश्चित की और राष्ट्र निर्माण की नौका को अपने लक्ष्य तक पहुँचा के छोड़ा।

Jean Peisseme ने अपनी पुस्तक 'History of Humanity' में लिखा, कि 16वीं शताब्दी तक एशिया, यूरोप से अधिक विकसित था, केवल 400 वर्षों में यूरोप एशिया की तुलना में बहुत आगे निकल

गया। जिसका एक प्रमुख कारण था, गांधी आदर्शों को
सर्व - धर्म - सम भाव जीवन में अपनाना था। इसे
भारत में लागू कर विकासशील से विकसित
राष्ट्र बनाने के लक्ष्य को आसानी से प्राप्त करने
के साधन के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।

सशक्तिकरण ✓

स — शक्ति — करण

- स → डालना
- शक्ति → व्यक्ति की वो क्षमता, जिसके द्वारा वो अपनी इच्छाओं को अन्य व्यक्तियों पर आरोपित करता है।
- करण → क्रिया

महिला / सुविधा वंचित समूह

स० से तात्पर्य, व्यक्ति की उस क्षमता से है, जिसके द्वारा वो स्वतंत्र होकर अपने जीवन से संबंधित निर्णयों को लेने की क्षमता प्राप्त कर लेता है, अर्थात वह अपना जीवन, उद्देश्य तथा संबंधों का निर्णय स्वतंत्र रूप से करना सीख जाता है।

उत्थान (supreme satisfaction)

सशक्तिकरण

- प्रथम चरण → Reform → दवा
- II^nd " → कल्याण → विटामिन
- III^rd " → सशक्ति० - Gym

स० की प्रक्रिया तीन चरणों से गुजरती है

1) सुधार चरण है 2) कल्याण 3) स०

I) सु० च० :- (बिगड़ी हुई चीज को सुधारना) है (उद्देश्य को सीमित)

सु० से तात्पर्य कुछ ऐसे जीवन के पक्षों को पहचान कर उन्हें बेहतर बनाने से है, जिसके अभाव या अनुपस्थिति में S० स्वस्थ एवं स्थायी प्रतीत नहीं होता है।

इति० के प्रारंभिक चरण से ही (कुछ

अपवादों को छोड़कर) महिलाओं की स्थिति दयनीय रही है क्योंकि भारत एक पितृसत्तात्मक तथा पितृवंशात्मक व्यवस्था रहा है

(पुरुष का स्त्री पर शासन) (हस्तांतरण of संपत्ति पुरुष → पुरुष)

चूँकि महि० S० के हाशिये पर रही है। ∴ S. जब-2 चुनौतियों से गुजरा तब-तब इसका दुष्प्रभाव म० पर ही दिखायी देता है। जहाँ एक तरफ पु० समाज के सभी विशेषाधिकारों (संपत्ति, सम्मान, शक्ति, प्रतिष्ठा आदि) का भागी रहा है, वहीं महिलायें सभी निर्योग्यताओं की शिकार रही हैं।

भारत में इस्लाम के आगमन से म० की स्थिति और बिगड़ी, क्योंकि उस धर्म तथा सा० संरचना में भी महि० की स्थिति अच्छी नहीं थी। इस्लाम भारत में स्थापित होने तथा अपने वंश को बढ़ाने के लिए महि० के लिए w. होने लगा।

परिणामस्वरूप म० की हैसियत में व्यापक गिरावट आयी जिसके कारण कई कुरीतियाँ, रीति-रिवाज, मूल्य-मान्यतायें विकसित हुईं। जो म० के अस्तित्व पर प्रतिकूल प्रभाव डालने लगीं जैसे पर्दा-प्रथा, सती प्रथा, बालिका शिशु वध, सती तथा जौहर, दहेज, अशिक्षा, अंधविश्वास आदि।

16-15 → इज्जत, जान ⟹ सती/जौहर

महिला
⇓
w/ मारकाट
→ पर्दा
→ घर में सीमित
→ बाल विवाह
→ बहु विवाह
→ विधवा
→ दहेज

age-gap
↳ bcoz
↳ w/युद्ध
↳ मार

उसका कोई base ठोस नहीं

जौहर :- क्षत्रियों की प्रथा जिसमें महिलाएँ अपनी इज्जत बचाने हेतु देह त्याग।

ब्रिटिश आगमन के साथ ही भारतीय समाज तार्किकता, धर्म निरपेक्षता, आधुनिकता आदि के प्रभाव में आया, जिसके प्रभाव में समाज ने अपने अतीत तथा वर्तमान का एक सुनहरे भविष्य की कल्पना में आत्म मंथन करने लगा। तथा परंपरायें, रीति - रिवाज, व्यवहार etc. की पहचान की गई। जो तार्किक मापदण्डों पर खरी नहीं उतरी तो इसके विरोध में S - धा० सु० आंदोलन शुरू हुए। जिसमें अधिकांश कुरीतियाँ मत से जुड़ी थी। इन S - धा० सु० आं० का उद्देश्य बाल वि०, बा० शिशु वध, सती, वि० पुनर्विवाह पर रोक आदि को समाप्त करना था।

द्वितीय चरण - 1910 के दशक में स्वतंत्रता सेनानियों ने यह महसूस किया कि 50% आबादी की उपेक्षा कर कोई शक्तिशाली आं० खड़ा नहीं किया जा सकता। फलस्वरूप म० को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल करने एवं भूमिका देने के क्रम में उन्हें सार्वजनिक जीवन में सहभागिता के लिए प्रेरित किया जाने लगा।

सार्व० जीवन में आकर म० ने स्वतंत्रता का
अर्थ, परतंत्रता का कारण व उसके निवारण की
युक्तियाँ समझने लगी जिसे कल्याण चरण की शुरुआत
कही जा सकती है। 1920 के दशक में AIWC
(All India Woman Association)
IWA (" " ")
IWMA (" " Muslim ")
जैसे संगठन अस्तित्व में आये। जिन्होंने नारी
शिक्षा, रोजगार, जागरूकता etc के क्षेत्र मे कार्य
करना प्रारंभ किया। जिससे म० समाज में
एक बेहतर स्थान प्राप्त कर सके। स्वतंत्रता
प्राप्ति के पश्चात संवैधानिक तथा वैधानिक
रक्षोपाय किये गये परंतु स्व० राज्य का
मुख्य केन्द्रण कल्याण ही रहा। कई ऐसी
विकास योजनाएं बनायी गयी। जिससे
म० के जीवन मे सुधार आये परंतु 1980
का दशक आते-2 यह समझ लिया गया, कि
म० के कल्याण के मार्ग में कई बाधाएं है
(1) परंपरागत पितृसत्तात्मक समाज द्वारा
रक्षोपायों को प्रभावी नही होने दे रहा।
(2) म० [illegible] के समाज में [illegible]

पहुँच नहीं पा रही है।

(3) वैसी म०, जो जागरूक तथा आ० क्रियाओं में संलग्न हैं, उनकी विचारधारा पु० के प्रभाव से स्वतंत्र नहीं है। परिणामस्वरूप महि० का कल्याण जितना होना चाहिए, उतना हो नहीं पाया।

सिविल सोसायटी
• किसी भी व्यक्ति को किसी भी व्यक्ति पर शासन करने का नैतिक अधिकार नहीं

III) 1980 के दशक में

शाहबानो, लता मित्तल, अरुन्धती राय जैसे म० के साथ कुछ ऐसी दुर्घटनाएँ हुई। जिसका उपचार पितृसत्तात्मक समाज के द्वारा नहीं किया। जिससे म० ने यह महसूस किया, कि जब तक उनमें अपने अधि० को प्राप्त करने की शक्ति नहीं आयेगी। तब तक उन्हें ना तो बराबरी का अधिकार मिलेगा और ना ही उनके जीवन में गरिमा आ सकती है।

1990 के दशक में महिलाओं का प्रयास सशक्ति० की दिशा में शुरू हुआ। जिसके अंतर्गत दो प्राथमिक लक्ष्य → (1) आ० स० इसके लिए रोजगार, स्वरोजगार, नौकरी, व्यवसाय आदि का सृजन।

(2) सार्वजनिक जीवन में प्रतिनिधित्व बनाने के लिए राजनैतिक आरक्षण की माँग

73, 74वाँ संवि० संशो० को महि० सश० की दिशा में एक अत्यंत imp. कदम माना जाना चाहिए जिसने महिलाओं को सार्व० जीवन में नीति-निर्माण एवं क्रियान्वयन का बड़ा अधिकार दिया। परंतु इतना मात्र ही काफी नहीं है। आवश्यकता यह है कि सर्वोच्च शिखर पर ये नीतियाँ बनती एवं क्रियान्वित होती हैं इन्हें वहाँ भी सहभागिता मिलनी चाहिए।

निरक्षर ⇓ परिवर्तन

शिक्षा ↓ अनुकूलनशीलता

स० के पाँच आयाम होते हैं :-

1) स्वतंत्रता - पुरुष मानसिकता एवं समाज से होने वाले शोषण से स्वतंत्रता।

2) पहचान या अस्तित्व - राजनीतिक - S-E एवं व्यक्तिगत संदर्भ में

3) समानता - S-P एवं E रूप में पुरुषों के समतुल्य अधिकार

4) कल्याण → शिक्षा, सम्पत्ति, रोजगार, स्वास्थ्य [illegible] जैसे क्षेत्रों में

5) Status :- पु० के समतुल्य, प्रतिष्ठा, (हैसियत) अधिकार एवं भागिता के रूप।

सशक्तिकरण
- सुरक्षा
  - संवैधानिक सुरक्षा
    - आरक्षण
      - Legislature
      - ब्यूरोक्रेसी
    - शिक्षा
  - वैधानिक उपाय (Act) ⇓ विभिन्न कानून
- कल्याण
  - विकास योजनाओं में भागीदारी
    - प्राथमिकता
    - केन्द्र में रख
  - सहभागिता
    - edu
    - रोजगार
    - स्वा० [illegible]

(15° / 20) Que 8 स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात महिला सं० की दिशा में किये गये प्रयासों से क्या आप सहमत है, टिप्पणी करें।

Que स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात महिलाओं के कल्याण एवं सशक्तिकरण की दिशा में किये गये imp प्रयासों का उल्लेख करें।

Que वो कौनसे कारण रहे, जिसकी वजह से यह प्रयास अपेक्षित परिणाम नहीं दे पाये।

Que महिला सशक्तिकरण की दिशा में प्रयास अहितकारी रहे, इस दिशा में वांछनीय सुझाव दें।

म० सशक्ति० की दिशा में निम्न लिखित सुझाव दिये जा सकते हैं।

1) बिना म० आरक्षण बिल के कोई भी प्रयास सफल नहीं हो सकता। अतः संसद तथा विधान० में इस बिल को शीघ्र पारित कराया जाये।

2) कई क्षेत्रों पद या नौकरियां हैं, जहाँ 70 से 100% म० के लिए आरक्षित होनी चाहिए, ताकि सार्वजनिक जीवन मे उनकी सहभागिता बढ़े। जैसे प्राथमिक शिक्षा, स्वास्थ्य, लिपिकीय कार्य etc.

3) 6 to 12 तक महि० के लिए मार्शल आर्ट अनिवार्य होना चाहिए, जिससे महि० में सुरक्षा तथा आत्मरक्षा का भाव जगे। साथ ही पु० में उन्हें शक्तिहीन समझने की मनोवृत्ति में परिवर्तन आये।

4) वर्तमान में मोबाइल सेवा सर्वसुलभ है, ∴ सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते हुए राष्ट्र - राज्य तथा जिला स्तर पर महिला Helpline से जुड़ा Integreted call centree बनना चाहिए, जो सभी सिमकार्ड में अनिवार्य रूप से निःशुल्क होना चाहिए। साथ ही स्पाट to सर्विस के अंतर्गत उपचार की अवधि सुनिश्चित होनी चाहिए। तथा उपचार ना दे पाने की अवस्था में जवाबदेही सुनिश्चित की जानी चाहिए।

5) टीवी, रेडियो, सिनेमा etc मनोरंजन के माध्यम सर्वसुलभ हो चुके हैं। ऐसे में एक राष्ट्रीय एवं सामाजिक जिम्मेवारी इनकी भी बनती है। अतः इन्हें प्रत्येक ½ घण्टे में 1 मिनट अनिवार्य रूप से ऐसे कार्यक्रमों को दिखाना चाहिए जो इन विषयों पर म० के जागरूकता लाए।

6) सम्पत्ति - शक्ति का एक बड़ा आधार है। ऐसे में इंदिरा आवास, भूमि सुधार, रोजगार सृजन आदि में महि० को प्राथमिकता देकर imp० पहल हो सकती है।

सुविधा वंचित समूहों (SC, ST) का सशक्तीकरण।

आरक्षण → नौकरी / लोकतंत्र / सामाजिक न्याय

लोकतंत्र: Folk (शासक) — अशिक्षित / नैतिक, गरीब, स्थानीय → देश की सफलता का आधार → ये ऊपर पहुँचे कैसे

सामाजिक न्याय (वितरणमूलक न्याय) → सबको लाभ प्राप्त हो → विकास को सब तक पहुँचाना

निर्माण, सिद्ध, विधाव सभा, नाम, नीति के ही क्रियान्वयन

Democracy

आरक्षण क्यों :-

1) लोकतंत्र के सुदृढीकरण के लिए

∴ नीति निर्माण में आरक्षण / क्रियान्वयन में res.

(2) सामाजिक न्याय :-

स्वतंत्रता हेतु (सब जातियाँ) ⇒ विकास ⇒ आजादी का लाभ सबको मिले ⇒ ∴ आरक्षण

" Share the food, love grows,
Share the love, peace grows
[illegible] "

आर्थिक आरक्षण क्यों नहीं

⑧ upper caste ✓ कैंगराणी गरीब को आरक्षण नहीं → already प्रतिनिधित्व नहीं

✓ Talent का हनन

✓ निर्भर होते जा रहे → बैसाखी हमेशा के लिए नहीं

✓ Promotion में आरक्षण → b/c late edjucation में entry ⇓ जल्दी रिटायर ⇓ top पर प्रतिनिधित्व नहीं

OBC को क्यों reas. ⇓ नीति निर्माण में भागीदारी है ⇓ ∴ विधायिका में reas नहीं

✓ ST & SC में एक बार मिल चुका है उसे दुबारा नहीं मिलना चाहिए → ✗ → लोग पुर्त्र → युगवता; → ◯ → भागात्मक

लोगों के लिए सोचें

आरक्षण

सुविधा वंचित समूहों का सशक्तीकरण :
सु० वं० स० के अंतर्गत तीन श्रेणियों को लिया जाता है, SC, ST तथा OBC। SC, ST समाज के उन सुविधा वंचित समूहों में से एक है, जिन्हें परंपराओं से ही समाज के हाशिये पर रखा गया। ना उन्हें किसी भी प्रकार का विशेषाधिकार था, नाहि उन्हें समाज मे किसी प्रकार की सुविधा, सम्मान etc में सहभागी बनाया गया।

सदियों से चली आ रही, C. व्यवस्था में वो पिछड़ते चले गये और अंततः ऐसी स्थिति आयी, जहाँ से उन्हें मानवीय दृष्टिकोण से देखना भी समाज ने बंद कर दिया; जिसके कारण उन्हें बहुआयामी निर्योग्यताओं का शिकार रहना पड़ा, यह स्थिति स्वतंत्रता आंदोलन के पूर्व तक जारी रही।

SC, ST को सामूहिक रूप से दलित कहा जाता है, जो मराठी शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता "फटी हुई धरती"। यह शब्द एक सांकेतिक प्रतीक है, कि जीवन में निराशा और आकांक्षा के प्रति अनिश्चितता का।

SC को परंपरागत रूप से अस्पृश्य, शूद्र, अंत्यज जैसे कई नामों से जाना जाता है। जो हिंदू वर्ण व्यवस्था में चतुर्थ वर्ण शूद्र श्रेणी में माने जाते हैं। साथ लगभग भारत मे 700 SC समुदाय हैं जिनकी ~~total~~ 15 करोड़ के आस-पास है। इनकी साक्षरता प्रतिशत/ज्ञानता ... 28-9%

सबसे कम मिजोरम में 0.03% तथा सबसे ज्यादा संख्या जिला कूच बिहार (50.1%) व सबसे अधिक pop. U.P. में हैं।

भारत में कई ऐसे राज्य हैं, जहाँ इनकी उपस्थिति राष्ट्रीय औसत (16.2%) से अधिक है, जिसमें पंजाब, हिमाचल प्रदेश, बिहार, बंगाल आदि imp. है। वहीं दूसरी तरफ N.E. राज्यों में जाति व्यवस्था के अभाव के कारण इनकी संख्या काफी कम है।

1929 में सायमन कमि० ने अपनी रिपोर्ट में शूद्र वर्ण से संबंधित जातियों के लिए S.C. शब्द का प्रस्ताव रखा जिसे स्वीकार किया गया तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी यही शब्दावली जारी रही। David Mandelbaum (डेविड मैंडलबाम) के acc. ⇒ दलित ना सिर्फ एक जातिगत अवधारणा है, बल्कि इसे आर्थिक संदर्भ में भी देखा जाना चाहिए। अर्थात यही जातियाँ गरीब किसान, बटाई मजदूर, कृषि श्रमिक, बंधुआ मजदूर आदि भी हैं। जैसा कि भारत के कुल बंधुआ मजदूर के ~~[illegible]~~ 61.5 = S.C., ST = 6.9% – B.C. है, अर्थात निम्न जातियाँ ही निम्न वर्ग ~~[illegible]~~ है। ~~[illegible]~~

ज्ञान आयोग के पूर्व अध्यक्ष आन्द्रे बे. के अनुसार S.C's सदैव से भारतीय समाज में संचित असमानता (Cumulative Inequality) के शिकार रहे हैं।

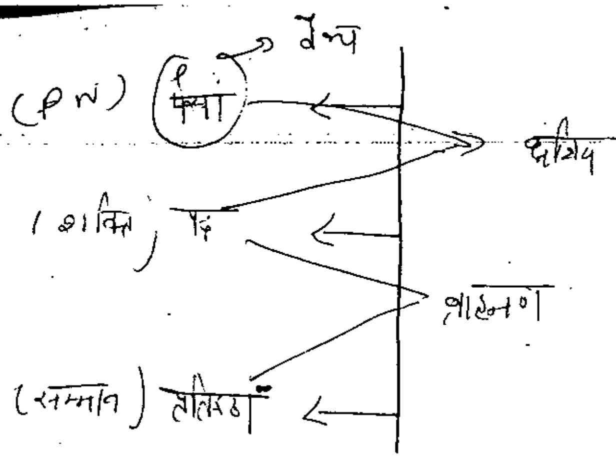

सर्वोच्च असमानता
सारी असमानताएँ एक ही व्यक्ति पर डाल दिया गया।

सभी आंदोलनों का आधार
स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व

ब्रिटिश आगमन के साथ ही भा० स० पश्चिमी आधुनिक मूल्यों जैसे स्वतंत्रता, समानता, सा० न्याय आदि के संपर्क में आया। जिसके कारण इन्होंने जाति व्यवस्था के अंतर्गत आरोपित निर्योग्यताओं की पहचान की तथा उच्च जाति के प्रभुत्व को संगठित होकर चुनौती देने लगे, जिसे जातीय आ० कहते हैं। इसकी शुरुआत द० भारत में हुई।

प्रारंभ में दलित आ० सुधारवादी रहे। इनकी मुख्य बातें थे मंदिर प्रवेश, सार्वजनिक स्थानों जैसे कुआँ, सड़क, तालाबों के प्रयोग की अनुमति तथा शिक्षा का अधिकार आदि। दक्षिण भारत के अब्राह्मण प्रतिक्रियावादी आ० — आत्मसम्मान आ० था जो ब्राह्मण विरोधी, आर्य विरोधी तथा जाति व्यवस्था विरोधी था। इसका नेतृत्व रामास्वामी नायकर उर्फ पेरियार ने किया।

द० आ० की दिशा में सबसे बड़ी क्रांति के प्रणेता डॉ० अम्बेडकर थे। उन्होंने दलित आ० की विचारधारा एवं मुद्दों को बदला तथा सुधार के स्थान राजनीतिक स० की माँग

करने लगे। इन्होंने बाम्बे असेम्बली में आनुपातिक आधार पर आरक्षण की मांग की। जिसे तात्कालिन ब्रिटिश P.M. रैम्जे मैकडोनाल्ड ने स्वीकार कर लिया। जिसके विरोध में गाँधी जी आमरण अनशन पर बैठ गये। जिसके कारण पुना समझौता में डॉ० अम्बे० ने अपनी मांग वापस ले ली। 1940 के दशक में डॉ० अम्बे० चुनावी राजनीति में उतर गये परंतु उनके दल को कोई विशेष सफलता नहीं मिली

(AISCF => All India shedule caste federation)

1946 तथा 51 के चुनाव में भी यह दल हार गया। जिससे व्यथित होकर डॉ० अम्बे० ने चुनावी राजनीति से सन्यास ले लिया, और अपने जाति बंधुओं (20,000 महार) के साथ बौद्ध धर्म में शामिल हो गए।

1956 में AISCF भंग हो गयी तथा RPI (1957) => रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया, का गठन हुआ। जो संसदीय लोकतंत्र के माध्यम से महाराष्ट्र व उसके आस-पास के क्षेत्रों में दलित स० के लिए सक्रिय रही।

1960 के दशक में No India दलित सक्रियता एवं स० के लिए ध्रुवीकरण का केन्द्र बना। 1970 के दशक में पंजाब के दलित नौकरशाह कांशी राम ने बामसेफ (BAMCEF, -Backword & Minorities central employees

यह संगठन पंजाब में सक्रिय रहा। परन्तु आगे चलकर इसकी कर्मभूमि UP बनी। 1981 में ही DS-4 (दलित शोषित संघर्ष समाज समिति) का गठन किया। और इसी के मंच से 1984 में BSP का उत्थान हुआ, जो UP में कई बार अपनी सरकार घटित कर चुका है, और आज भारत का एक राष्ट्रीय दल है।

द० ज० का दूसरा पक्ष संवैधानिक तथा वैधानिक है। संविधान सभा में द० की सुरक्षा एवं कल्याण के लिए कई उपाय किये, जिसमे निम्नलिखित प्रमुख है—

(a) संविधान की प्रस्तावना,

(b) 366, 341, अनु 17, 25, 15, 16, 46, 46, 335 — शैक्षणिक, आर्थिक, सामाजिक जीवन में सुरक्षा हेतु

=> 330, 332, 334, 243-D, 243-T => राजनीतिक सुरक्षा।

=> 338 => SC, ST कमिशन

II) => वैधानिक सुरक्षा :

- अस्पृश्यता निवारण अधि०
- सिविल अधिकार संरक्षण //
- SC, ST अधिनियम

अपराधी / Victim पीड़ित / offender (अपराधी)

III) कल्याण एवं विकास

(1) आरक्षण → संसद, विधानसभा तथा पंचायती राज
→ सरकार नौकरियों में
→ उच्च शिक्षा तथा तकनीकी संस्थानों में
→ भूमि, मकान, दुकान आदि के आवंटन में

(2) विकास
→ शैक्षिक
→ आर्थिक
→ स्वास्थ्य
→ कल्याण

आर्थिक कल्याण :- SC व ST के आर्थिक विकास के लिए सर्वोच्च विभाग सामाजिक न्याय तथा सशक्तिकरण मंत्रालय है जो पूरे भारत में उनके हितों की सुरक्षा एवं उन्नति का प्रचारन करता है। इस विभाग का aim - मुख्य रूप से वैसी योजनाएँ कार्यक्रम आदि की निगरानी करती है, जो इन्हीं वर्गों को ध्यान में रखकर बनायी जाती है। इसी विभाग के अंतर्गत SC Development Beaureo कार्य करता है, जो SC, ST ~~SC SP~~ (शेड्यूल कास्ट सब प्लान), जो एक व्यापक रणनीति है द्वारा यह सुनिश्चित करता है कि देश में होने वाले आ० विकास का लाभ योजनाओं के माध्यम से इन वर्गों तक पहुँचे। इसी ही ध्यान में रखकर NSCFDC अर्थात् नेशनल शेड्यूल कास्ट फिनान्स डवलपमेंट कॉर्पोरेशन का गठन हुआ। जो ग्रामीण क्षेत्रों के SC को 40000 तथा नगरीय क्षेत्रों

के 80 को 55.000 का ऋण स्वरोजगार हेतु उपलब्ध कराया है। इसके अतिरिक्त नेशनल सफाई कर्मचारी फाइनेन्स & डेवलपमेन्ट कारपोरेशन आदि भी हैं जो इन्हें स्वरोजगार के लिए ऋण उपलब्ध कराते हैं। स्वतंत्रता के 6 दशक बीत गये और इस दिशा में बहुआयामी प्रयास हुए। परंतु वास्तविकता निम्नलिखित है।:—

↳ SC, ST को देश के गांव, मानवाधिकार का लाभ अत्यंत सीमित रूप में पहुँचा। मात्र 2.5% से लेकर 9.09% SC, ST प्रथम श्रेणी नौकरियों में 4.06% से लेकर 11.82% द्वितीय श्रेणी 9.59 से 15.65 तृतीय श्रेणी नौकरियों में और 18.37 से 21.24 चतुर्थ श्रेणी नौकरियों में कार्यरत हैं।

भारत के भूमिहीनों में 52% दलित हैं 56% [illegible] हुए हैं। SC ST कमिशन के acc. 50% से अधिक SC, ST गैर सरकारी ऋण ग्रस्तता के शिकार हैं। 36% SC, ST की मासिक आय 650/— से कम है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात से ही सुविधा वंचितों की सुरक्षा, कल्याण एवं सशक्तिकरण को [illegible]

बौद्ध धर्म => 45

इस समस्या को छोटा समझा गया और यही कारण था कि आरक्षण जैसे प्राव० को प्रारंभ में 10 सालों के लिए बनाया गया, परंतु जैसे-2 वास्तविकता समझ में आयी। कल्याण, विकास तथा सुरक्षा के उपायों को दीर्घकालिक एवं बहु आयामी बनाया जाने लगा।

जो लोग इन विशेषाधिकारों का विरोध करते हैं, उनका तर्क है कि इससे मानसिक रूप से अपने कल्याण हेतु सदैव व्यवस्था पर निर्भर रहेंगे। साथ ही वो राष्ट्र के विकास में एक शिथिल सहभागी (Passive Partner) बने रहेंगे। इनकी निर्भरता कल्याण कार्यक्रमों पर बनी रहेगी। जिसके कारण ये कभी स्वयं विकास एवं स्वविकास के लिए सक्रिय नहीं हो पायेंगे। परंतु यह तर्क उचित नहीं है। सदियों की वंचना दो दिन में समाप्त नहीं होती। स्थिति सुधर रही है, तथा प्रतिनिधित्व उत्तरोत्तर उल्लेखनीय है। लोकतंत्र तथा सामाजिक न्याय ने इन्हें मुख्य धारा में लाने का पूरा प्रयत्न किया है। इसी के परिणामस्वरूप राष्ट्रपति, मुख्य न्यायधीश, लोकसभा अध्यक्ष जैसे imp पदों से लेकर नौकरशाह एवं सामान्य कर्मचारी तक इनकी उपस्थिति देखी जा सकती है। परंपरागत असमानताएं समाप्त हुई हैं, तथा स्वतंत्र

के पश्चात संविधान की प्रस्तावना में समानता एवं सामाजिक न्याय के प्रति जो प्रतिबद्धता व्यक्त की गई थी समाज उसे वास्तविक रूप देने के लिए आज भी सक्रिय है।

नगरीकरण – समस्याएँ तथा समाधान

Feminist → women → Cultural → ~~Male/Female~~ equal → They says अगर को माना नहीं है women should not compete with man. bcoz दोनों में शारीरिक Generally

Feminist हैं → ग्राम → यों हो स्तर पर मान → Male = Female

नगरीकरण :- नगर बनते रहने की सतत् प्रक्रिया

अति-नगरीकरण :- (Over-Urban) → जनसंख्या > अवसंरचना (सड़क, बिजली, पानी, शिक्षा etc)

अव-नगरीकरण :- (Under) अवसंरचना < pop.

वि-नगरी० :- (De-urbanisation)

आप्रवासी < उत्प्रवासी

नगर → ग्राम

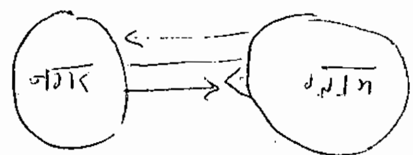

जब शहर में आने की तुलना में गाँव जाने वाले लोगों की संख्या अधिक हो।

भारत में नगरीकरण का प्रारूप (trend) :-

भारत की लगभग 35% popu नगर निवासी हैं, जो विश्व की तुलना में काफी कम है। लगभग विश्व की आधी आबादी नगरों में रहती है, जबकि भारत की 32.6%
भारत में 1901 में मात्र 11% जनसंख्या नगर निवासी थी, जो 2011 में 32.16% हो गयी। मुम्बई देश का सबसे ~~जनाधिक्य~~ जनाकीर्ण शहर वाला नगर है, व विश्व का चौथा।

भारत में ~~नगरीकरण कोई आधु० अवधा.~~ नहीं है, इसे 3000 B.C. पूर्व हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो की सभ्यता से जोड़कर देखा जा सकता है। इसके अनुसार भारत की पहली सभ्यता नगरीकृत थी। आगे चलकर जैसे-जैसे साम्राज्य अस्तित्व में आये वैसे-वैसे उनकी राजधानियाँ बनी और इन्हीं प्रशासनिक इकाइयों को नगर कहा गया।

कालांतर में धर्म-संस्कृति आदि उन्न

और इनके कारण ही तीर्थ एवं धार्मिक स्थलों का भी विस्तार हुआ, जिसके कारण अयोध्या, बोधगया, हस्तिनापुर, कपिलवस्तु, वाराणसी, उज्जैन जैसे नगर अस्तित्व में आये।

मध्यकाल में भारत में मुसलमानों का आगमन हुआ। जिसके कारण किलों का महत्व बढ़ा। इसके परिणामस्वरूप कई किला नगर अस्तित्व मे आये जैसे – आमेर, गोलकुण्डा, अहमदाबाद, ग्वालियर, चित्तौड़गढ़ आदि।

भारत में ब्रिटिश आगमन के पूर्व तक नगरीकरण की प्रक्रिया धीमी रही, ब्रिटिश शासन के साथ ही भारत में नगरीकरण की गति तीव्र हुई। जिसके दो प्रमुख कारण थे। पहला - केन्द्र, राज्य, जिला, तहसील के स्तर पर प्रशासनिक इकाईयों का उभरना।
दूसरा – औद्योगिकरण तथा व्यापारीकरण के कारण अहमदाबाद, कोलकाता, सूरत, मुम्बई जैसे नगरों का उभरना।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात नगरी० की प्रक्रिया तीव्र हुई। विशेषकर द्वितीय FYP (महालनोबिस योजना) के कारण सुदूर क्षेत्रों में औद्योगिक ईकाइयाँ लगाई गयी। जिसके कारण राउरकेला, बोकारो, रायपुर, भिलाई, विशाखापट्टनम्, दुर्गापुर आदि नगर अस्तित्व में आये। 1990 में प्रारम्भ हुए आ० उदारीकरण ने नगरीकरण की प्रक्रिया को नई दिशा दी, तथा सेवा क्षेत्रों के विस्तार के कारण बेंग्लूर, पूणे, सिकंदराबाद, गुड़गाँव, फरिदाबाद नोएडा ...

प्रवल्ला से उभरे | भारत

भारत में नगरीकरण की प्रवृत्ति को तीन चरणों में बाँटा जाता है | पहला :- नगरीय विकास की धीमी वृद्धि का काल (1881 — 1931)

(2) नगरीय वि० की मध्यम वृद्धि का काल (31 — 61)

(3) " " " तीव्र " " (61 — Onwards)

वर्ष	नगरों की संख्या	कुल नगरीय pop (करोड़ों में)	कुल जन० का %	दशकीय वृद्धि
1951	2343	6.244	17.29	41.42
61	2365	7.894	17.97	26.41
71	2590	10.911	19.91	38.23
81	3378	15.946	23.34	46.14
91	4689	21.761	25.71	36.47
01	5161	28.535	27.78	31.13
11	7935	37.710	32.16 / 31	32.16

नगरीय श्रेणी	जनसंख्या का आकार	नगरों की संख्या	कुल नगरीय जन० का %	दशकीय वृद्धि
I	1 लाख ↑	423	61.48	23.12
II	1 लाख ↓ 50,000 ↑	498	12.30	43.45
III	50,000 ↓ 20,000 ↑	2386	15.00	46.19
IV	20,000 – 10,000	1560	8.08	32.93
V	10 ↑ 5 ↓	1057	2.85	41.49
VI	5 ↓	227	0.29	21.21

1971 में भारत में कुल 8 महानगर थे जो 2011 में 53 हो गए हैं, जबकि 3 नगरीय केन्द्र (मुम्बई-पुणे, लखनऊ-कानपुर, तथा हैदराबाद-सिकंदराबाद) मेगालोपोलिस बनने की प्रक्रिया में अग्रसर हैं।

मेगालोपोलिस ⇓ (जब दो महानगर अपने विस्तार के क्रम में अपनी औपचारिक सीमा खो देते हैं, उसे मेगालो० कहते हैं।)

मेगालोपोलिस ↓ मुख्य नगर जहाँ पर गतिविधि केन्द्रित

नगरीकरण की समस्याएँ :- पश्चिमी देशों के विपरित भारत में नगरीकरण की प्रक्रिया चिंताजनक है, जहाँ पश्चिमी समाजों में नगरी० को ही विकास का आधार माना जाता है। लगभग U.S. में गाँव की अवधारणा समाप्त हो चुकी है।
(वहाँ दो term → City
→ Country site हैं)

भारत में नगरी० का मुख्य कारण आर्थिक है, जो ग्रामीण व्यक्तियों को बेहतर अवसर प्राप्त करने तथा नगरीय अधोसंरचना एवं सुविधाओं का लाभ लेने के लिए प्रवास हेतु प्रेरित करती है, जिसके परिणामस्वरूप भारत में लगातार नगरीकरण आगे बढ़कर अति नगरीकरण में परिवर्तित हो चुकी है। जिसके कारण निम्नलिखित समस्याएँ देखी जा सकती हैं :-

1) आवास की समस्या :- हुडको के अनुसार भारतीय नगरों में 18.78 मिलियन (अर्थात् लगभग 2 करोड़)

आवासीय इकाईयों की कमी व मात्र 17.6% नगरीय pop. को ही पानी के कनेक्शन मिले हैं। जो विकासशील देशों (चीन-91, S. अफ्रीका 86%, ब्राजील 80%) की तुलना में भी कम है। भारत में औसतन 1-6 घण्टे के बीच पानी की सप्लाई होती है, व 18% जनसंख्या अस्वच्छ ~~शौच~~ शौच का प्रयोग करती है। 37% प्रदूषित जल खुले में बहते है, तथा 34.4% नगरीय pop. गरीब है। भारत में ~~आर्थिक~~ यातायात स्थिति भी खराब है, व औसतन सार्वजनिक वाहन 26 से 61km की गति से चलते है जिसके कारण ध्वनि व वायु प्रदूषण बहुत अधिक बढ़ जाती है। इस प्रकार भारतीय नगरों की अधोसंरचना अत्यंत दयनीय अवस्था में है।

2) <u>आर्थिक असमानता</u> :- भारतीय नगरों में आ- विषमता अत्यधिक है, उदाहरण के लिए दिल्ली के लोधी रोड जैसे दक्षिण भाग में प्रति वर्ग किमी० मात्र 10 लोग रहते है, जबकि शाहदरा जैसे अनाधिकृत स्थानों पर 13,000 लोग। मुम्बई की स्थिति इससे भी दयनीय है, जहाँ जूहू बीच में 17 P/km² जबकि धारावी जो एशिया का दूसरा सबसे बड़ा स्लम है, सवा लाख लोग/km²।

(Survival of fittest)

जहाँ तक आय में असमानता का प्रश्न है, उसमें भी बहुत बड़ा अंतर है, उदाहरण के लिए — ... ... की

जहाँ भारत में 4½ लाख रु को औसत खर्च है, वहीं महान नगरों में 9 लाख 50,000 का, अर्थात् नगरों में ग्रामों की तुलना में दुगना खर्च है। नगर निवेश के स्थान होते हैं, जहाँ निवेशक को शिक्षा, उपभोग की वस्तु, स्वास्थ्य, मनोरंजन आदि के रूप में एक बड़ा बाजार मिलता है। ∴ ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा नगरों में निवेश को बढ़ावा मिलता है। जिसके कारण अवसरों की संरचना नगरों में ही सृजित होती है जो बड़ी संख्या में R–U प्रवास को आकर्षित करती है। जिससे अति नगरीकरण की समस्या आती है व अवसर सीमित हो जाते हैं, जिससे बेरोजगारी, अर्द्धबेरोजगारी जैसी समस्याएं जन्म लेती हैं।

	घनत्व
दिल्ली	11,215 व्यक्ति/ km^2
देश	413 व्यक्ति/ km^2

③ आपराधिक गतिविधियों के केन्द्र :→ नगरों में आ॰ विषमता, बेरोजगारी, अवसरों का सीमित होना एक तरफ व दूसरी तरफ बेशुमार धन, आडम्बर प्रदर्शन एवं प्रदर्शनार्थ उपभोग दिखाई देता है, जिसके कारण सापेक्षिक वंचन अपने चरम पर होता है, जिसके कारण ~~बलात्कार~~ उत्पात जैसे- पॉकेटमारी, चोरी, डकैती, अपहरण आदि एक तरफ व कुण्ठा के कारण नशाखोरी, झगड़े, घरेलू हिंसा आदि दूसरी तरफ बढ़ जाते हैं। प्रसिद्ध विद्वान अल्बर्ट कोहेन के अनुसार जिन नगरों में सापेक्षिक वंचन अधिक होती है, वहाँ तीन प्रकार के

साथ

...विघटन देखे जा सकते हैं —

(1) व्यक्तिगत विघटन :- नशाखोरी, जुआ, शराब आदि।

(2) पारिवारिक विघटन :- विवाह - विच्छेद, वृद्धों के साथ दुर्व्यवहार, पत्नि प्रताड़ना (wife - battering) आदि।

(3) सामाजिक विघटन :- बलात्कार, हत्या, अपहरण, छेड़छाड़ आदि

4) जनांकिकीय असंतुलन :- भारत में पश्चिमी देशों
(Demographic Imbalance) की तुलना में ग्राम - U प्रवास की प्रवृति पुरुषजन्य है। जिसके कारण यहाँ एक तरफ ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादक pop० का अनुपात घट जाता है। वहीं दूसरी तरफ नगरों में एक तरफ इनकी अधिकता हो जाती है, दूसरी तरफ लिंगानुपात में भारी गिरावट आ जाती है। राष्ट्रीय औसत की तुलना में भारतीय नगरों का लिंगानुपात काफी कम है। जिसका कारण क्रमिक प्रवास है
(Sequential Migration)

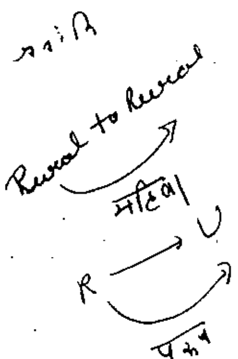

(पहले पुरुष — बाद में wife — बच्चे — बेटी)

जिससे लिंगानुपात में असंतुलन के कारण महिला जन्य अपराधों में वृद्धि हो गई है। जिसके परिणामस्वरूप विधि व्यवस्था की समस्या, सामान्य बात है। महिलाएँ असुरक्षित महसूस करती हैं, तथा अन्य सामान्य विधि व्यवस्था भी एक प्रमुख समस्या है

5) प्रदूषण एवं बिमारी :- नगरों में वाहन, उद्योग, गंदे नाले, जल भराव, चिमनी, मोटर, विभिन्न सामाजिक वाहने, रासायनिक स्त्राव विषैले पदार्थ आदि बड़ी मात्रा में वायुमण्डल में फैलते हैं। जिसके कारण ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण एवं भूमि प्रदू॰ इतनी अधिक बढ़ जाती है, जिससे जान लेवा बिमारियाँ होती हैं। नगरों मे डायबिटीज, हृदय रोग, चर्मरोग, अनिद्रा, ब्लड प्रेशर आदि की समस्या ग्रामों की तुलना में अत्यधिक है।

नगरीकरण समाधान → ग्रामीण / कृषि विकास
नगरीकरण समाधान → उद्योगों का विकेन्द्रीकरण

=> PURA =>

1. सूचना तक॰ की बेहतर व्य॰
2. बेहतर सड़क
3. अच्छी शिक्षा।
4. बेहतर स्वास्थ्य सुविधायें

=> नगरो॰ से उत्पन्न समस्याओं का समाधान ग्रामीण एवं कृषि विकास में निहित है। इसके लिए निम्न॰ प्रयास किये जाने की आवश्यकता है।

1. रोजगार के बेहतर अवसरों का निर्माण।
2. On and of farming कृषि

जिसमें फल, सब्जी, दुग्ध और, कोविड महत्वों जैसे क्षेत्रों मे आधु॰ तकनीक एवं बाजार की व्यवस्था।

[illegible] का विकास

83% बच्चे शैक्षणिक

(IV) जैविकीय कृषि, उच्च उत्पाद, चिकित्सकीय तथा सौंदर्य मूलक पेड़-पौधों का विकास

(V) कृषि से जुड़े वैज्ञानिकता तथा दफ्तर में विकास — Agrobusiness विशेष सलाह तकनीक, फसल सुरक्षा, बाजार गतिशीलता, मूल्य की जानकारी तथा पशु स्वास्थ्य की सुविधा।

(VI) वानिकी बागवानी, पशु चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में विशेषज्ञता का विकास

VII) कृषि आधारित पर्यटन का विकास - ग्रामीण पर्यटन, पर्या० पर्यटन, स्वास्थ्य प०, तथा खान-पान संबंधी पर्य० का विकास तथा इन क्षेत्रों के विकास के लिए निजि निवेश तथा FDI को प्रोत्साहित करना।

VIII) कृषि आधा० उद्योग, वस्त्र, चमड़ा, औषधीय क्षेत्रों का विकास

IX) शिक्षा के क्षेत्र सुविधाओं को बेहतर बनाना और विशेषकर नगरीय तथा सार्वजनिक क्षेत्र के स्कूलों के समतुल्य गुणवत्ता का विकास करना। इसके लिए नवोदय केन्द्रीय विद्या० आदि का ग्रामीणीकरण करना आवश्यक है।

उद्योग धंधों का विकेन्द्रीकरण :-

ब्रिटिश काल से ही औद्यो० नगरीय क्षेत्रों में सीमित रहा। भिवं देश की औद्योगिक पट्टी रहते हैं। इन्हीं औद्यो० पट्टियों में सीमित हुई। परिणामस्वरूप औद्यो० पट्टी केंद्रित ढांचा संरचना

वहीं केन्द्रित रह गये, ~~जिन्हें~~ हम औद्योगिक कहते हैं।
फलस्वरूप ऐसे ~~क्षेत्रों~~ का
औद्यो० नहीं हुआ, जहाँ कृषि एवं ग्रामीण विकास की स्थिति ठीक नहीं थी।

⇒1990 के पश्चात् उदारीकरण की नीति के कारण सरकार ने आ० विकास की जिम्मेदारी वापस ले ली। जिससे निवेश का लाभ भी बड़े महानगरों एवं इससे जुड़े क्षेत्रों को मिला। जिससे असंतुलित वि० हुआ और अविकसित क्षेत्रों में ग्राम - नगर प्रवास बढ़े, जिसने अति नगरीक० को प्रभावित किया।

परिणामस्वरूप ऐसी एक नी० बनाई जानी चाहिए, जो सुदूर क्षेत्रों में निवेश को आकर्षित करे, और इसके लिए उन्हें तो सभी सुविधाओं तथा अनुदान आदि की गारंटी हो, जिससे उन क्षेत्रों में पर्यावरण मूलक उद्योग धंधों का विकास हो।

ग्रामीण क्षेत्रों में हर 200 से 300 किमी० की दूरी पर Ecopolis विकसित करने की आवश्यकता है, जो ग्रामीण रूप से बड़ी मात्रा में रोजगार सृजन करता है, और जिसके कारण प्रवास रोकने में भी मदद मिल सकती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है, कि जहाँ

में ∴ समस्या जनक है, क्योंकि यहाँ अति नगरी- है। गंदी बस्तियाँ, अपराध, आय की असमानता एवं प्रदूषण आ० न० की विशेषता है, जिसका समाधान ग्रा० तथा कृषि विकास एवं कृषि आधारित उद्योग क्षेत्रों में विकेन्द्रीकरण में ढूँढने की आवश्यकता है।

वैश्वीकरण के सा० सांस्कृतिक प्रभाव—

भूमण्डलीकरण :- भूमण्डलीकरण वर्तमान में एक अत्यंत विवादास्पद प्रक्रिया है, जिससे भविष्य एवं वर्तमान के प्रति कई संदेह, आशंका एवं अपेक्षाएँ जुड़ी हुई हैं। विशेषकर भारत जैसे विकासशील देश जो कुछ मजबूरियों में इसे स्वीकार करते हैं, उनका आशंकित होना और स्वभाविक है। उदारी के संबंध में दो दृष्टिकोण हैं।

(1) विकसित देशों का जो मानते हैं, कि सभी अर्थ० में एकीकरण होना चाहिए। जिससे सभी एक-दूसरे का लाभ ले सके और जिससे सबको लाभ हो। इनका तर्क है, कि विकसित देशों के पास पूँजी तथा तकनीक है, जबकि विकासशील के पास सस्ता श्रम, कच्चा माल एवं वृहद बाजार। फलस्वरूप सभी एक-दूसरे की शक्ति का लाभ उठा सकते हैं,

महिला सशक्तीकरण :- भूमण्डलीकरण ने महिला स० की प्रक्रिया को गति दी है, इसके कारण कई ऐसे नये व्यवसायों का सृजन हुआ है। जिसमें म० का प्रभुत्व या एकाधिकार है, जैसे — फैशन, बीपीओ, टेक्सटाइल, कॉस्मेटिक, स्वास्थ्य, मनोरंजन आदि के क्षेत्र में म० को बड़े अवसर मिले हैं। जिससे लैंगिक असमानता कमजोर हुई है, तथा महिलाओं में उद्यमिता को बढ़ावा मिला है।

किसानों पर प्रभाव :- भा० कि० सदैव से ही समस्याओं में रहे हैं। इनका चित्रण प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' में दिखता है, जैसा कि ओल्ड मैकेंजी ने कहा था "Agri is life style & life line of the Indian farmer" अर्थात कृषि भा० कि० की जीवन शैली तथा जी० रेखा है। परम्परायें, रीति-रिवाज एवं जीवन की सभी क्रियायें कृ० के आस-पास ही घूमती हैं।

भारत के श्रमबल का लगभग 52% कृषि पर ही निर्भर है। ऐसे में भू० का इन पर प्रभाव जानना आवश्यक है।

भू० ने कृषि को प्रत्यक्ष रूप से बाजार से जोड़ दिया है। आज किसान वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ गया है, तथा मांग-पू० के नियमों के अनुसार नगदी फसल, व्यवसायिक कृषि etc की ओर अग्रसर है। जिससे वह उन्नत मशीन, कृ० तकनीक, रासायनिक रसा आदि का प्रयोग कर रहा है। जिससे उसे बेहतर आ० लाभ मिल रहे हैं। और इसके कारण वह अपने

तथा अपने निर्यातों को बेहतर लोकल-हालत कर पा रहा है। विशेषकर इसका लाभ उन क्षेत्रों के किसानों को अधिक हुआ है, जो शिक्षा तथा सूचना का लाभ ले रहे हैं।

भा० समाज के आधु० की प्रक्रिया में आयी तीव्रता :-

प्रखर मोहंती के शब्दों में आज का भारत 100 चैनलों के बीच जीता है, तथा यूरोप - अमेरिका तथा पूरा विश्व उसके हाथों में पड़े टी. वी के रिमोट कंट्रोल में आ चुका है। भारत एक परम्परावादी, रूढ़िवादी तथा प्रतिक्रियावादी (anti-change) S. रहा है। जिससे स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात संविधानवाद के मार्ग में बड़े अवरोधक उत्पन्न हुए। परंतु भू० ने इन अवरोधकों को कमजोर किया है। जिसके कारण स्वीकृति एवं विचारों के प्रति लोगों में उदारता आयी है। धर्म, जाति, जेण्डर जैसे मुद्दों पर प्रतिक्रियाएँ उदार हुई हैं, तथा लोगों में स्वीकार्यता बढ़ी है।

समाज के सुविधा वंचित वर्गों के हितों की रक्षा :-

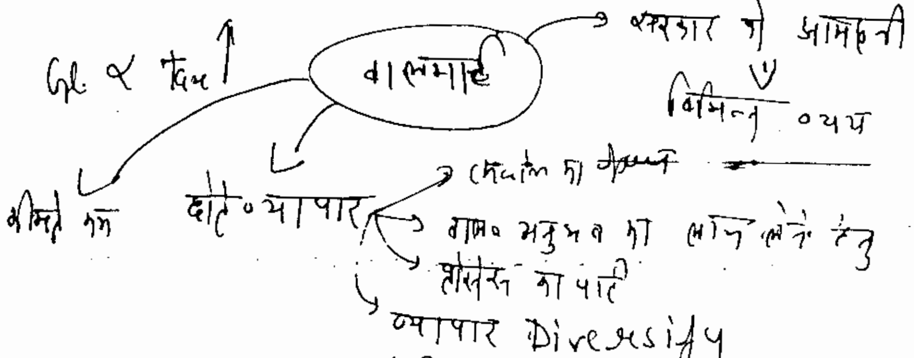

भू० के कारण बड़ी सं० में देशी तथा MNC's का देश के आगमन हुआ है, जिससे अर्थव्यवस्था का आकार बढ़ा है, और इससे बड़ी मात्रा में सरकार को राजस्व प्राप्त ... ... पर मिल

है। जिससे राज्य के माध्यम से लोगों की पहुंच...
जिससे कल्याणकारी राज्य में सुविधा वंचितों के प्रति जो प्रतिबद्धता थी, उसमें वृद्धि हुई है। विकास योजनाओं, स्वास्थ्य शिक्षा, रोजगार हेतु धन उपलब्ध हुआ है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के सुविधा वंचितों के लिए बेहतर रक्षोपाय संभव हो सके हैं। शिक्षा का अधिकार, RTI का अधि०, खाद्य सुरक्षा जैसी योजनाएँ इससे लाभान्वित हुई हैं। विश्व की 1/4 गरीब भारत में रहते हैं। और ऐसे में जरूरी है, कि उनके उत्थान के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध हो। जो इस नयी अर्थव्यवस्था ने संभव किया है।

वस्तु के लिए व्यक्ति का निर्माण

नकारात्मक प्रभाव :-

1) गाँवों पर दुष्प्रभाव :- भारत एक कृ० S. है, तथा 50% आबादी कृषि कार्य में सक्रिय है। G. ने तकनीक को बढ़ावा दिया है। जिससे कृषि कार्य श्रमिक के स्थान पर मशीनों से हो रहे हैं। जिसके कारण कृषि क्षेत्र में श्रमिकों की माँग घटी है। ग्रामीण मजदूर जीविका हेतु एक स्थान से दूसरे स्थान बदल रहे हैं। जिससे उनके जीवन में स्थायित्व का अभाव आ चुका है, तथा रोजगार की सुरक्षा घटी है।

biological

प्रजाति → शारीरिक (Race) भिन्नता
नृजाति

2) जनजातियों पर प्रभाव :- स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात S. ने जनजाति के प्रति स्नो० की नीति अपनायी। जिसमें उनके विकास को सुनिश्चित करते हुए, उनके सांस्कृतिक तथा नृजातीय पहचान को बनाए रखना था, परंतु भूमण्डलीकरण के कारण SEZ, खनन के पट्टे, तथा प्राकृतिक संसाधनों के दोहन का अधिकार MNC's व बड़ी C. को दिये जा रहे हैं। जिससे जनजातियों का सदियों से "जड़, जंगल तथा जमीन" पर चला आ रहा अधिकार अचानक समाप्त हो जाता।

...उदारवाद के परिप्रेक्ष्य में भी देखा जाना चाहिए।

महिलाओं पर प्रभाव :- भूम० ने म० को एक तरफ वेतन भोगी श्रम के रूप में मान्यता दी है। वहीं दूसरी तरफ म० का वस्तुकरण भी बढ़ा है। आज वैसे क्षेत्र जहाँ म० की उपस्थिति निंदनीय या वर्जित थी। वहाँ महिलाएं आ गयी हैं। जिनके सौंदर्य को उपभोग के रूप में देखा जाता है। बार में म० का बार टेण्डर होना, विवाहों के अवसर पर महि० का वेटर बनना, पुरुषों के उत्पादों का म० द्वारा बेचा जाना तथा प्रत्येक विज्ञापन में महि० सौंदर्य की नुमाइशी के कारण म० की गरीमा का क्षरण हुआ है। तथा उनके प्रति हिंसा में वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त भारत चूंकि एक विषुवत रेखा के नजदीक अवस्थित देश है। जहाँ काला या सांवला होना स्वभाविक है। जहाँ विशिष्ट उत्पादों को ध्यान में रखकर गोरेपन को मूल्य बनाया जा रहा है। जिससे भविष्य ऐसा आबादी जो तथाकथित सुंदर या गोरी नहीं है, उनमें हीन भावना बढ़ती जा रही है, जो समाज के लिए सही नहीं है।

उपभोगतावादी संस्कृति का विकास :- मार्क्स ने ~~18 वीं~~ शताब्दी में पूंजीवाद पर टिप्पणी करते हुए कहा था, कि "यह पहली अर्थ० है, जो वस्तु के लिए व्यक्ति को बनाती है।" (Subjects are made for the objects)

जबकि अमेरिकी विद्वान (C.W. मिल्स) ने कहा था - नयी अर्थ० में वस्तु का स्थान व्यक्ति

ने ले लिया है। आज मैकडानॉल्ड्स, नायकी, कोक जैसी चीजें वस्तु नहीं बनाती, बल्कि एक संस्कृति का निर्माण कर रही है, जिसे नयी पीढ़ी का मैकडानाल्डीकरण या पेप्सीकरण कहा जा रहा है। जिसके कारण नयी पीढ़ी केवल उपभोग पर आधारित संस्कृति को सम्मान में लेती है। और इसके संबंधों में भी उपभोक्तावाद तथा उपयोगितावाद बढ़ा है। वेलेन्टाइन डे, रोज डे, जैसे त्यौहार कुछ विशिष्ट वस्तुओं को ध्यान में रखकर प्रोत्साहित किये जा रहे हैं जिससे व्यय बढ़ा है। जिसके कारण व्यक्ति तथा परिवार तनाव में रहने लगा है, व इसकी ही प्रतिक्रिया में भारत के Redemptive (विमोचक) Movement जिसे "बाबा संस्कृति" कहा जाता है, बढ़ रही है।

विजातीय संस्कृति से समजातीयता की ओर :-

किसी भी समाज की अपनी सांस्कृतिक धरोहर होती है जिसे सदियों से एक पीढ़ी दूसरे पीढ़ी को स्थानान्तरित करते हुए उसकी रक्षा करती है। इसके अंतर्गत भाषा, खान-पान, रहन-सहन, नृत्य, संगीत आदि लिये जा सकते हैं।

भू० वैश्विक ग्राम पर आधारित अवधारणा है, जिसने भारत की बहुलवादी संस्कृति को नष्ट करना प्रारंभ कर दिया है, और एक-कीय संस्कृति विकसित हो रही है। पिछले 30 वर्षों में भारत की ~~3000~~ (250) स्थानीय बोलियाँ लुप्त हो गयी और यह प्रक्रिया और भी तेज है। जैसे, रार्ट 34

जो सांस्कृतिक पहचानों को प्रभावित कर रही है, क्योंकि ... में जनसंख्या जितनी समरूप होगी। उत्पाद के लिए बाजार भी उतना ही बड़ा होगा।

वैश्विक बनाम स्थानीय :- वैश्विकता, स्थानियता को चुनौती दे रही है। जहाँ-2 वैश्वि० का प्रभाव उत्पाद, व्यवसाय, संस्कृति पर पड़ा है। वहाँ स्थानियता अपने अस्तित्व हेतु संघर्ष कर रही है। परिणामस्वरूप स्थानिय अर्थ० समाज तथा सांस्कृतिक धरोहरों पर इसका दुष्प्रभाव पड़ रहा है। और ये अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है। जिसका पूरे विश्व मे विरोध हो रहा है।

पूँजीपति राजनीति व्यवस्था को प्रभावित कर रहे हैं :- आज पूँजी० राज० पर हावी हो चुका है। इनके दबाव में कानून बनते हैं, निवेश, विनिवेशीकरण आदि की नीतियाँ बनाती हैं। जिनका एकमात्र aim शुद्ध लाभ कमाना होता है। इनके प्रभाव में सरकारें असहाय हैं। और ये जो चाहते हैं, वही होता है। G. गरीब विरोधी अवधारणा है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है, कि G. को भा० में शुरू हुए दो दशक से अधिक हो चुके है। तथा इसके अनुभव भी मिश्रित रहे हैं। G. को कोई सही मानता है, तो कोई गलत। परन्तु वास्तविकता ये है कि इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। विशेषकर तब जब पिछले कुछ वर्षों की इसी G. के कारण वैश्विक मंदी आयी है। जिससे USA, यूरो० व भा० भी प्रभावित हैं। ऐसे में सचेत रहना व अपने हितों के प्रति ... आवश्यक है। ये व्यवस्था

... अनुमानों पर आधारित ... में ऐसा न हो कि उस
की तुलना में हेतु वेतना अधिक हो जाये कि उसकी
[illegible] पूर्ति संभव ना हो। आधुनिक तथा
अर्टिन ममे० हैरो के दबाव से। इसके दुष्परिणाम
को जितना संभव हो तटस्थ करना है। इसी में
भा० का वस्तु हड़िया के साथ लाभ- हानि निहित है

Que ‒ भारत में जाति व्य० को ~~[illegible]~~ परम्परा और
की आधुनिकता के संदर्भ में देखना चाहिए।
इससे आप क्या समझते हैं। जाति की आधुनिक
समाज में क्या भूमिका है।

धर्मनिरपेक्षता

ध० शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1851 में जॉर्ज जेकब हॉलियोक ने प्रयोग किया, जो धर्म तथा पवित्र के प्रतिगामी था। जिसे अंग्रेजी में "irreligion" अर्थात् धर्म विरोधी के रूप में लिया गया। जैसे-२ समाज में बौद्धिकता तथा तार्किकता का विकास होता गया। वैसे-२ इस शब्द का संदर्भ भी बदलता गया।

ध० की पृष्ठभूमि पुनर्जागरण तथा प्रबोधन काल है, जिसमें तर्क तथा बौद्धिकता को सभी ज्ञानों के ऊपर स्वतंत्रता तथा प्रमुखता दी गयी।

ध. एक विचारधारा है, जिसमें व्यक्ति के विचार तथा व्यवहार अपने या किसी धर्म के प्रभाव से मुक्त या स्वतंत्र हो जाते हैं।

ध को किसी भी समाज में चार आधारों पर मापा जाता है :-

1) समाज में धार्मिक स्थलों एवं संगठनों का महत्व एवं सत्ता का स्तर क्या है।

2) व्यक्ति अपने जीवन में धा० स्थलों, कृत्यों, पूजा पाठ को कितना imp देते हैं।

3) व्यक्ति के सा० अंतःक्रिया, संबंध आदि पर धर्म का कितना प्रभाव है।

4) समाज में उन मूल्यों, मापदण्डों का स्तर क्या है, जिसका धर्म निषेध करता है, जैसे विवाह-विच्छेद, नशाखोरी, गर्भपात, समलैंगिकता etc.

प्यू रिसर्च सेंटर, अमेरिका ने इन्हीं मानदण्डों पर विश्वव्यापी ध० के स्तर का अध्ययन

जिसमें भारत विश्व के उन मुख्य देशों में है जहाँ ...

न्यूनतम है। भारत से अधिक धार्मिक समाज भारत, सेनेगल, नाइजीरिया, इण्डो॰ है। भा॰ में 85% लोगों ने यह स्वीकार किया, कि उनके जीवन में धर्म imp॰ भूमिका निभाता है।

भारतीय संदर्भ में धर्म॰ को उसके प्राचीन सनातन मान्यताओं जैसे सर्वधर्म सम्भाव तथा जिओ और जीने दो में देखा जा सकता है। परंतु वास्तविक धर्मनिरपेक्षता ब्रिटिश औप॰ शासन के दौरान प्रारंभ हुई। जिसमें आधुनिकता, तार्किकता, उद्योगवाद आदि के आने के कारण धर्म का imp. जीवन में कमजोर होने लगा। भारत जैसे समाज में धर्म॰ को S-धार्मिक सुधार आंदो॰ में देखा जा सकता है जब प्रत्येक धा॰ मान्यता, परम्परा, प्रचलन को तर्क की कसौटी पर कसा गया, तथा जो खरे नहीं उतरे उन्हें अस्वीकार कर दिया, इसकी पृष्ठभूमि भी प॰ आधु॰ शिक्षा थी।

S पर महात्मा गाँधी एवं पं॰ नेहरू के विचार imp. है। गाँधी जी -

1) व्यक्तिगत संदर्भ में वैष्णवता को S॰ मानते हैं क्योंकि उनके अनुसार ये सार्वभौमिक नैतिक एवं प्रमाणित है।

2) सामा॰ जीवन में गाँ॰ सर्वधर्म सम्भाव तथा जीओ व जीने दो पर आधारित विचारधारा मानते हैं।

प॰ नेहरू - ... ...

नैतिक अध्यात्मवाद पर बल देते है।

(2) सामा० जीवन में व्या० दृष्टिकोणों की अपेक्षा बढ़ती।

टी० मंदन के अनु० — भा० में S-E-Reform Move. एवं स्वतंत्रता संग्राम को पूर्ण रूपेण S० दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए सभी धर्मों, जातियों, क्षेत्रों को एक मंच पर लाना। S. संस्कृति का पर्याय है। परंतु इसकी प्रतिक्रिया भी (साम्प्रदायवाद) समानान्तर जारी रही।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात S. को उदारवादी लोकतंत्र का आधार बनाया गया, जो निम्नलिखित अनुच्छेदों में देखा जा सकता है।

A — 14, 15 (1 & 2), 16 (2), 23 (2), 25 से 28, 25 (2), 30, 38, 39, 40, 51 (A)

जैसे-2 संविधान, कानून, औद्योगिकरण, नगरीकरण, तकनीकी शिक्षा, संचारवाद आदि का प्रभाव बढ़ा। वैसे-2 समाज के जीवन में तर्क एवं बौद्धिकता imp. प्राप्त करती गयी। जिससे S. धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया तेज हो गयी। 2008 में इंडिया टुडे कम्यूनल हार्मोनी ने चार महानगरों दिल्ली, मु०, कोल० तथा चेन्नई में 18-30 वर्ष के युवाओं के बीच एक सर्वे किया जिसके निम्नलिखित निष्कर्ष निकले —

1) युवाओं के लिए रोजगार, आज

(स्थिति एक कैरियर और धा० मुद्दों को अधिक उठाया)

2) मात्र 3% युवाओं ने गीता या अपने धर्म ग्रंथ को एक बार सम्पूर्ण अध्ययन किया है।

3) पर्व व त्यौहार का imp उनके जीवन में काफी कम है।

4) उपवास, तीर्थाटन etc. को भी imp. नहीं मानते।

: परंतु कई विद्वान इनसे सहमत नहीं हैं। T. N. मदन तथा आशीष नंदी भारत में धर्मनिरपेक्षतावाद को कमजोर विचारधारा मानते हैं। इनके अनुसार भारत जैसे धर्म प्रधान देश में धर्मनिरपेक्षतावाद एक बेमानी विचारधारा है। ~~क्योंकि~~ (1) भारतीय समाज, धर्म से स्वतंत्र या मुक्त होकर, चिंतन या विचार कर ही नहीं सकता। (2) यह विचार० अल्पमत धा० लोगों के प्रति असंवेदनशील है।

(3) राज्य स्वयं को S. तो मानता है, परंतु अल्पसंख्यकों के प्रति उदार एवं सहानुभूति पूर्ण है।

इनके शब्दों में भा० धर्मनिरपेक्षता हिन्दु धर्म तक सीमित है। 1980 के दशक में शाह बानो प्रकरण में यह मुद्दा जोर-शोर से उठा, जब माननीय S. C. के निर्णय को पलटते हुए एक अलग कानून बनाया गया। जिसका वामपंथियों, अधिकारवादियों सहित ... ने ...

इसके बावजूद वह कानून अदालत के माध्यम से

ही एक घटना मनोहर जोशी बनाम नितिन भाउराव प्रकरण में माननीय S.C. ने कहा, कि हिन्दुत्व कोई धर्म नहीं है, बल्कि एक जीवन शैली है। अर्थात सार्व० जीवन में धर्म को मान्यता मिली।

भारत में धर्मनिरपेक्षता को तीन आयामों में देखा जा सकता है → (1) व्यक्तिगत आयाम - प्रत्येक व्यक्ति अपने धर्म, सम्प्रदाय तथा पंथ को मान तथा पालन कर सकता है। और वो इसे परिवर्तित करने के लिए भी स्वतंत्र है।

(2) सामाजिक आयाम :- प्रत्येक व्यक्ति या धर्म अन्य धर्मों या सम्प्रदायों के प्रति पारस्परिक सम्मान प्रदर्शित करेंगे।

(3) राजकीय आयाम :- राज्य के लिए सभी धर्म बराबर होंगे।

पं० नेहरू भारतीय S.वाद की तीन विशेषताएँ बताते हैं →

(1) सभी को धार्मिक या गैर-धार्मिक होने की स्वतंत्रता

(2) राज्य सभी धर्मों के प्रति सम्मान का समान भाव रखेगा।

(3) राज्य किसी भी धर्म विशेष के प्रति आग्रह या अनुराग नहीं रखेगा

परंतु यह सिद्धांत तब व्यवहारों में भी ...

1984 में सिक्ख विरोधी दंगों, 1992 में बाबरी मस्जिद विध्वंस, 2002 में गुजरात दंगों के दौरान या तो सक्रिय नहीं हुआ या उस पर किसी सम्प्रदाय विशेष के लोगों के प्रति दुराग्रह का आरोप लगा। एमनेस्टी इंट. भी मानता है, कि भारत में दंगों के प्रति न्याय की प्रक्रिया पर्याप्त शिथिलता बरतती है। दोषियों को दण्ड नहीं दिया जाता।

धर्मनिरपेक्षता

भा० स्वतंत्रता के साथ ही स्वयं को एक एक S. समाज के रूप में स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है। 1976 में 42वाँ संवि० संशोधन के द्वारा धर्मनिरपेक्षता को संवि० की प्रस्तावना में शामिल कर इस प्रतिबद्धता के प्रति अपने समर्पण को समाज में पुनर्आवेशित किया, परंतु इसके मार्ग में कई बाधाएं हैं, जैसे आर्थिक प्रतिस्पर्धा, संसाधनों पर दबाव, अल्प-संख्या० एवं विरोधाभासी विचारधारा आदि के कारण समय-समय पर होने वाली साम्प्रदायिक तनाव व दंगे० इसकी प्रभाविता को कम करते हैं।

धर्मनिरपेक्ष

S. वाद को बढ़ावा देने के लिए निम्नलि. कदम उठाये जाने चाहिए। (1) आर्थिक - सांस्कृतिक - राज० विकास हेतु अवसर की समानता का सृजन

(2) भारत के विभिन्न धर्मों की मनोवृत्ति तथा S-धा० परंपराओं को समझने पर बल

(3) सार्वजनिक जीवन में किसी भी धर्म विशेष के प्रचार-प्रसार पर प्रतिबंध (धार्मिक रैली) etc)

4) राजनीति में धर्म के उपयोग पर प्रतिबंध

5) ~~धर्म ...~~

6) साम्प्रदायिक दंगों, तनाव पर कठोर नियंत्रण एवं न्याय की दिलाने की व्यवस्था।

7) A amount से ज्यादा लोगों के मरने पर CBI का कानून है।

निष्कर्ष : कहा जा सकता है, S.वाद तथा सम्प्रदायवाद भारत में एक समानान्तर चलने वाली विचारधारा है। जिसमें संविधानवाद बनाम धार्मिक द्वैधवाद एक-दूसरे पर अपनी सर्वोच्चता स्थापित करने हेतु संघर्ष कर रहे हैं। प्रसिद्ध विद्वान M.N. श्रीनिवास ने कहा "स्वतंत्रता के 5 दशक से अधिक हो गये परंतु आज भी भारत संविधान से नहीं वेद से चलता है। परंतु 1990 के पश्चात जैसे-2 उदारीकरण की प्रक्रिया तेजी पकड़ रही है, वैसे-2 तर्क विज्ञान एवं अर्थशास्त्र का imp. बढ़ रहा है, वह धर्म का प्रभाव कमजोर हुआ है। 2002 के पश्चात देश में कोई गंभीर साम्प्रदायिक दंगा नहीं हुआ। यह प्रमाणित करता है जो S.वाद के प्रति संविधान में प्रतिबद्धता व्यक्त की गयी, समाज उस पर पूरे आत्मविश्वास के साथ अग्रसर है।